- सुधार, **कट्टरपंथी कैथोलिक चर्च के प्रथाओं और अधिकार के खिलाफ एक आंदोलन था**। परिणामस्वरूप **प्रोटेस्टेंटवाद का उदय** हुआ और उनके विरोध में प्रोटेस्टेंट नेताओं ने यूरोप के विभिन्न देशों में प्रोटेस्टेंट चर्चों की स्थापना प्रारम्भ कर दी।
- भिक्षु मार्टिन लूथर ने अर्धशासकीय पत्र और चर्च की अन्य बुराइयों का विरोध किया। **पहला प्रोटेस्टेंट चर्च जर्मनी में** (1520-1545 से) राजा के समर्थन से स्थापित किया गया था।
- जर्मन शासकों ने राजनीतिक कारणों के कारण भी लूथर का समर्थन किया। वे पोप के अधिकार से स्वतंत्रता चाहते थे और ईसाई मठों के धन पर नियंत्रण चाहते थे। इसके तुरंत बाद, प्रोटेस्टेंट सुधार यूरोप के बाकी हिस्सों में भी फैल गया।
- **राष्ट्रवाद ने भी भूमिका निभाई** क्योंकि लोगों ने अब रोम में स्थित कैथोलिक चर्च के अधिकार का तिरस्कार किया।
- इंग्लैंड में, राजा हेनरी VII ने खुद को चर्च का प्रमुख घोषित किया। तब महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने चर्च ऑफ रोम से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करके और कुछ सुधार सिद्धांतों को अपनाकर, चर्च ऑफ इंग्लैंड को आधिकारिक चर्च घोषित कर दिया।
- प्रोटेस्टेंट चर्चों ने अभिजातीय लैटिन के बजाय आम लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा का उपयोग किया। **बाइबल का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किया गया**। (यह भारतीय पुनर्जागरण के दौरान संस्कृत के स्थान पर स्थानीय भाषाओं के आरोहण के समान था)। स्थानीय भाषाओं के उपयोग ने **राष्ट्रीय चेतना को और बढ़ाया और इस प्रकार पुनर्जागरण और सुधार को यूरोप में राष्ट्रवाद का अग्रदूत कहा जा सकता है**।
- तर्क को धर्म से अधिक महत्वपूर्ण माना गया।
- 17वीं शताब्दी तक यूरोप के आधे हिस्से ने अपने प्रोटेस्टेंट चर्च स्थापित किए थे।

सुधार का कारण

1. धार्मिक कारक:

- धार्मिक कारण निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण कारण था। **धार्मिक भ्रष्टाचार** ने चर्च प्रणाली की वैधता पर प्रश्न चिन्ह लगाया। लेकिन यह भी सत्य है कि आंतरिक सुधार पहले ही शुरू हो चुके थे, इसलिए यह एक बड़ा मुद्दा नहीं था। इसीलिए **आर्थिक और राजनीतिक कारकों ने धार्मिक कारक की तुलना में अधिक निर्णायक भूमिका निभाई**।

2. आर्थिक कारक:

- रोमन कैथोलिक चर्च ने **साहूकारी को हतोत्साहित** किया। जो प्रभावशाली व्यापारी वर्ग के लिए अनुकूल नहीं था। जिसके परिणामस्वरूप वे चर्च से अलग हो गए।
- **चर्च के पास देश की सबसे उपयुक्त भूमि थी**, जिसे शासकों ने जब्त करके अपनी संपत्ति को बढ़ाने के साधन के रूप में देखा। इस प्रकार शासक ने प्रोटेस्टेंट आंदोलन का समर्थन किया।
- **राष्ट्रवाद के उदय** ने भी प्रमुख भूमिका निभाई। चर्च द्वारा एकत्रित राजस्व रोम जाता था। दूसरे देशों के लोगों ने इसे अपने देश से धन की निकासी के रूप में देखा।

3. राजनीतिक कारक:

- राष्ट्रवाद का उदय
- निरपेक्षता का उदय (दोहरी संप्रभुता के विरुद्ध) - जैसा कि चर्च ने राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया और साथ ही कुछ महत्वाकांक्षी राजाओं ने वैश्विक चर्च प्रणाली की गिरावट को तीव्र करने और राजनीतिक मामलों पर पूर्ण नियंत्रण हासिल करने के लिए प्रदर्शनकारियों के आंदोलन को प्रोत्साहित किया।

तीस वर्षिय युद्ध (1618-1648)

- यह **कैथोलिक शक्ति और प्रोटेस्टेंट शक्ति के बीच संघर्ष** था। यह **रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के हितों के टकराव** के परिणामस्वरूप जर्मनी में शुरू हुआ। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यद्यपि यह एक धार्मिक संघर्ष के रूप में शुरू हुआ, लेकिन **राजनीतिक परिणामों के साथ यह समाप्त हो गया और इस तरह यूरोप में शक्ति संतुलन बदल गया**।